हिन्दी दैनिक

राष्ट्रीय स्वाभिमान

RNI No. : MAHHIN/2008/24084. www.rashtriyaswabhimaan.com

● वर्ष : 18 ● अंक : 129 ● मुंबई, शनिवार, 21 नवम्बर 2026 ● पृष्ठ : 4 ● मूल्य 1 रुपए

मुंबई-पुणे की बढ़ती प्यास बुझाने के लिए 25 साल का मास्टर प्लान, 2051 तक का लक्ष्य तय

मुंबई। मुंबई और पुणे महानगर क्षेत्रों में तेजी से बढ़ती आबादी, शहरी विस्तार और औद्योगिक गतिविधियों के कारण आने वाले वर्षों में पानी की मांग बड़ी चुनौती बनने वाली है। इस चुनौती से निपटने के लिए महाराष्ट्र सरकार ने दोनों महानगर क्षेत्रों की भविष्य की जल जरूरतों को ध्यान में रखते हुए दीर्घकालीन जल नियोजन की तैयारी शुरू कर दी है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने शुक्रवार को 'वर्षा' निवास पर आयोजित समीक्षा बैठक में प्रशासन को मुंबई महानगर क्षेत्र के लिए वर्ष 2051 तक और पुणे महानगर क्षेत्र के लिए वर्ष 2047 तक का एकीकृत जल आराखड़ा तैयार करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट किया कि अगले 20 से 25 वर्षों की जरूरतों को ध्यान में रखकर जलापूर्ति की ऐसी व्यवस्था बनाई जाए, जिससे बढ़ती आबादी, उद्योगों और तेजी से विकसित हो रहे शहरी क्षेत्रों को पर्याप्त पानी उपलब्ध कराया जा सके।

बैठक में मुख्यमंत्री ने प्रस्तावित जल परियोजनाओं से जुड़ी अड़चनों को प्राथमिकता के आधार पर दूर करने और मंजूरियों की प्रक्रिया में तेजी लाने पर जोर दिया।



उन्होंने कहा कि केवल नए बांध और जल परियोजनाएं बनाना ही भविष्य की जरूरतों का समाधान नहीं है, बल्कि उपलब्ध पानी का बेहतर उपयोग, रिसाव पर नियंत्रण, शोधित सीवेज का पुनः उपयोग और वर्षा जल संचयन जैसे उपाय भी जल नियोजन का अभिन्न हिस्सा होने चाहिए। बैठक में जलसंपदा मंत्री गिरीश महाजन, मुंबई के सह-पालकमंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मुंबई महानगर क्षेत्र में आबादी के लगातार विस्तार के साथ जलापूर्ति की मांग भी तेजी से बढ़ रही है। मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण के महानगर आयुक्त डॉ. संजय मुखर्जी ने बैठक में बताया कि क्षेत्र की वर्तमान आबादी करीब 2.75 करोड़ है। अनुमान के अनुसार, वर्ष 2051 तक यहां पानी की कुल मांग बढ़कर 16,139 दशलक्ष लीटर प्रतिदिन यानी एमएलडी तक पहुंच सकती है। इतनी बड़ी जरूरत को पूरा करने के लिए मौजूदा जल स्रोतों के साथ नई परियोजनाओं, वैकल्पिक जल स्रोतों और पुनर्चक्रण की व्यवस्था को एक साथ आगे बढ़ाना होगा।

वर्तमान में भातसा, पिंजाल, तानसा और वैतरणा जैसे जल स्रोत मुंबई महानगर क्षेत्र की जलापूर्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। हालांकि, भविष्य में बढ़ने वाली मांग को देखते हुए इन स्रोतों के अलावा काळू, देहरजी, बाळगंगा, कोंढाणे, खोलसापाडा और शिलार जैसी प्रस्तावित जल परियोजनाओं को भी आगे बढ़ाने की योजना है। मुख्यमंत्री ने इन परियोजनाओं से जुड़ी वन भूमि, पर्यावरणीय मंजूरी, भूमि अधिग्रहण और पुनर्वास जैसी समस्याओं का समाधान प्राथमिकता से करने को कहा। उन्होंने संबंधित विभागों को आवश्यक अनुमतियां प्राप्त कर परियोजनाओं के काम में तेजी लाने के निर्देश दिए, ताकि निर्धारित समयसीमा के भीतर जलापूर्ति की नई क्षमता विकसित की जा सके।

मुंबई के लिए तैयार होने वाले जल आराखड़े में केवल बांधों और जलाशयों से मिलने वाले पानी पर निर्भरता नहीं रखी जाएगी। सीवेज के पुनर्चक्रण, द्वितीयक और तृतीयक शोधन, शोधित पानी के लिए अलग वितरण पाइपलाइन और वर्षा जल संचयन को भी योजना में शामिल किया जाएगा। इससे पीने योग्य पानी का उपयोग मुख्य रूप से घरेलू जरूरतों के लिए किया जा सकेगा, जबकि उद्योगों और अन्य उपभोक्ताओं की कुछ जरूरतें शोधित पानी से पूरी की जा सकेंगी। मुख्यमंत्री ने प्रशासन को इस दिशा में व्यावहारिक और समयबद्ध योजना बनाने को कहा।

पुणे महानगर क्षेत्र के लिए भी भविष्य की जल जरूरतों का आकलन करते हुए बड़े स्तर पर योजना तैयार करने के निर्देश दिए गए हैं। पुणे महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण (पीएमआरडीए) के आयुक्त अभिजीत चौधरी ने बताया कि वर्तमान में पुणे क्षेत्र की आबादी करीब 1.80 करोड़ है, जिसके वर्ष 2047 तक बढ़कर 4.12 करोड़ होने का अनुमान है। इस विस्तार के साथ पानी की मांग में भी भारी वृद्धि होगी। फिलहाल क्षेत्र में 36.90 टीएमसी पानी का आरक्षण उपलब्ध है, जबकि मौजूदा मांग 41.65 टीएमसी बताई गई है। अनुमान है कि वर्ष 2047 तक कुल मांग लगभग 100 टीएमसी तक पहुंच जाएगी। प्रतिदिन के हिसाब से यह जरूरत करीब 7,816 एमएलडी होगी। इस अंतर को देखते हुए नए जल स्रोतों की तलाश और मौजूदा स्रोतों के कुशल उपयोग की योजना तैयार करना आवश्यक हो गया है।

मुख्यमंत्री फडणवीस ने अधिकारियों से कहा कि जल संकट का समाधान केवल नई परियोजनाओं के निर्माण से नहीं होगा। उपलब्ध पानी का अधिकतम उपयोग सुनिश्चित करना भी उतना ही जरूरी है। बढ़ते उद्योगों, व्यावसायिक गतिविधियों और डेटा सेंटरों की पानी की जरूरत को देखते हुए शोधित सीवेज का पुनः उपयोग बढ़ाया जाना चाहिए। इसके साथ ही जल वितरण व्यवस्था में होने वाले रिसाव को रोकने, वर्षा जल संचयन को प्रोत्साहित करने और वैकल्पिक जल स्रोतों का विकास करने पर ध्यान देना होगा। उन्होंने नगर निगमों और नगरपालिकाओं को जल लेखा परीक्षण कराने के निर्देश दिए, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि किसी क्षेत्र में कितना पानी पहुंच रहा है, कितना वितरित हो रहा है और वास्तविक बिलिंग कितनी हो रही है। उन्होंने व्यावसायिक और औद्योगिक जल उपयोग में स्मार्ट मीटर लगाने की प्रक्रिया को भी बढ़ाने पर जोर दिया। इसका उद्देश्य पानी की खपत का सही हिसाब रखना और राजस्व न देने वाले पानी यानी नॉन-रेवेन्यू वॉटर को चरणबद्ध तरीके से कम करना है। जलापूर्ति के दौरान पाइपलाइन में होने वाले रिसाव, अनधिकृत उपयोग और वितरण संबंधी कमियों का पता लगाने के लिए सटीक आंकड़ों की जरूरत होगी। मुख्यमंत्री ने संबंधित निकायों को इस दिशा में नियमित निगरानी और जवाबदेही सुनिश्चित करने को कहा। पुणे के लिए सीवेज शोधन को भविष्य की जल व्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार बनाने की योजना है।

सोनिया गांधी की पुस्तक के पन्ने फाड़ने पर मुंबई कांग्रेस का विरोध प्रदर्शन

शिंदे गुट के खिलाफ दक्षिण मुंबई सहित चार जिला कांग्रेस इकाइयों ने किया 'जूते मारो' आंदोलन



मुंबई। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी की पुस्तक 'Belonging: A Journey of Love' के पन्ने फाड़ने की घटना को लेकर मुंबई कांग्रेस ने कड़ा विरोध जताया। एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले शिवसेना गुट की इस कार्रवाई के विरोध में दक्षिण मुंबई, दक्षिण मध्य मुंबई, उत्तर पश्चिम मुंबई और उत्तर मध्य मुंबई जिला कांग्रेस की ओर से 'जूते मारो' आंदोलन किया गया।

कांग्रेस सांसद एवं मुंबई कांग्रेस की नेता वर्षा गायकवाड ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स (पूर्व में ट्विटर) के माध्यम से इस घटना पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने कहा कि सोनिया गांधी ने अपनी पुस्तक में ऐतिहासिक तथ्यों को प्रस्तुत किया है। यदि शिंदे गुट को उनकी बातों से आपत्ति थी, तो वह लोकतांत्रिक और संवैधानिक तरीके से अपना विरोध दर्ज करा सकता था।

वर्षा गायकवाड ने पुस्तक के पन्ने फाड़ने की कार्रवाई की आलोचना करते हुए कहा कि इस तरह की हरकत से संबंधित लोगों की वैचारिक सोच सामने आती है। उन्होंने शिंदेसेना को चुनौती देते हुए कहा कि यदि उनमें हिम्मत है तो वे सावरकर का अपमान करने के आरोपों को लेकर आरएसएस के सरसंघचालक गोलवलकर की पुस्तक 'Bunch of Thoughts' के खिलाफ भी इसी तरह की कार्रवाई करके दिखाएं।

वर्षा गायकवाड की इस पोस्ट के माध्यम से मुंबई कांग्रेस ने पुस्तक के पन्ने फाड़ने की घटना को लेकर अपना विरोध दर्ज कराया और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा लोकतांत्रिक विरोध के अधिकार का मुद्दा उठाया।

वीजा धोखाधड़ी रोकने के लिए BLS इंटरनेशनल की नई पहल, 'BLShield' लॉन्च



मुंबई। वीजा और कांसुलर सेवाओं में होने वाली धोखाधड़ी से आवेदकों को बचाने के लिए BLS इंटरनेशनल ने वैश्विक #CitizenAwareness अभियान के तहत विशेष मैस्कॉट 'BLShield' और डिजिटल 'फ्रॉड अवेयरनेस गाइड' लॉन्च की है।

इस पहल के माध्यम से फर्जी वीजा वेबसाइट, अनधिकृत अपॉइंटमेंट बिक्री, फिशिंग ईमेल, फर्जी एजेंट और वीजा की गारंटी देने वाले झूठे दावों के प्रति लोगों को जागरूक किया जाएगा। कंपनी ने आवेदकों को ओटीपी, बैंकिंग और व्यक्तिगत जानकारी साझा नहीं करने तथा भुगतान से पहले आधिकारिक माध्यमों की पुष्टि करने की सलाह दी है।

BLS इंटरनेशनल के संयुक्त प्रबंध निदेशक शिखर अग्रवाल ने कहा कि कंपनी का उद्देश्य वीजा प्रक्रिया को सुरक्षित और पारदर्शी बनाना है। डिजिटल जागरूकता के जरिए आवेदक धोखाधड़ी की पहचान कर अपनी जानकारी और धन की सुरक्षा कर सकेंगे। कंपनी 100 से अधिक देशों में सेवाएं प्रदान करती है।

आशाराम बापू के उपचार और मोटेरा आश्रम के संरक्षण की मांग को लेकर मुंबई के आजाद मैदान में प्रदर्शन

श्री योग वेदांत सेवा समिति के नेतृत्व में महाराष्ट्र के विभिन्न जिलों से पहुंचे हजारों समर्थक; प्रशासन को सौंपा ज्ञापन, निष्पक्ष जांच और शीघ्र रिहाई की भी उठाई मांग

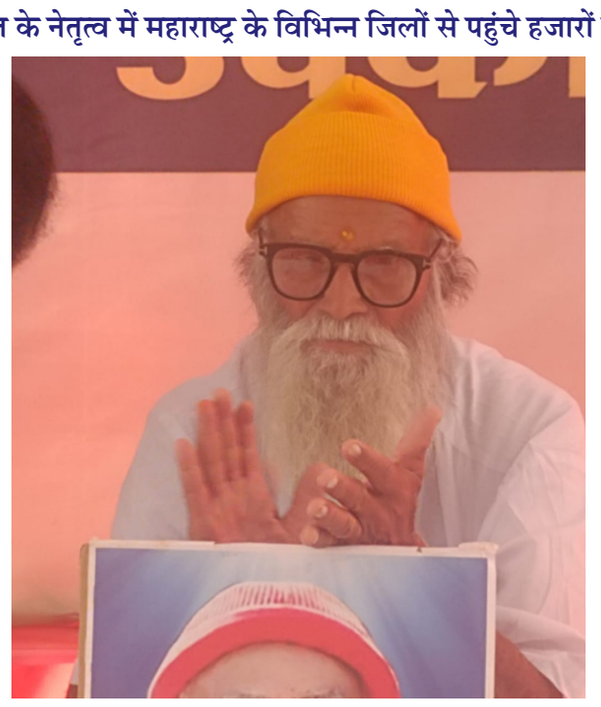



मुंबई। 87 वर्षीय संत आशाराम बापू के स्वास्थ्य, बेहतर चिकित्सा सुविधा और अहमदाबाद स्थित मोटेरा आश्रम के संरक्षण की मांग को लेकर गुरुवार को मुंबई के आजाद मैदान में शांतिपूर्ण जनआंदोलन किया गया। श्री योग वेदांत सेवा समिति और साधक परिवार की ओर से आयोजित इस प्रदर्शन में महाराष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में समर्थक, महिलाएं, बुजुर्ग और युवा शामिल हुए। प्रदर्शनकारियों ने अपनी मांगों को लेकर प्रशासन को ज्ञापन सौंपा। आयोजकों की ओर से जारी जानकारी के अनुसार, आशाराम बापू की बिगड़ती स्वास्थ्य स्थिति को देखते हुए उन्हें तत्काल बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने की मांग की गई। ज्ञापन में जोधपुर स्थित आरोग्यम आयुर्वेदिक अस्पताल में समुचित उपचार और उनकी पसंद के प्रशिक्षित निजी सेवक की सुविधा उपलब्ध कराने की अपील की गई। समिति का कहना है कि यह मांग मानवीय आधार पर की जा रही है और संबंधित न्यायालय के आदेशों का पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। प्रदर्शनकारियों ने अहमदाबाद के मोटेरा स्थित आश्रम को भी संरक्षित रखने की मांग उठाई। उनका कहना है कि यह स्थान उनके अनुयायियों के लिए धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व रखता है तथा यहां सामाजिक, शैक्षणिक, धार्मिक और महिला उत्थान से जुड़े कार्य संचालित होते हैं। इसलिए इसे ओलंपिक खेल मैदान के लिए अधिग्रहित नहीं किया जाना चाहिए।

आंदोलन के दौरान आशाराम बापू के मामले की निष्पक्ष जांच कराने, सीबीआई जांच पर विचार करने और उन्हें शीघ्र न्याय दिलाने की मांग भी की गई। प्रदर्शनकारियों ने मुकदमे से जुड़े आरोपों और कानूनी प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए अपनी आपत्तियां प्रशासन के सामने रखीं। ये सभी मांगें और आरोप आंदोलन के आयोजकों एवं समर्थकों की ओर से प्रस्तुत किए गए हैं। आयोजन में सोशल मीडिया प्रभावक आशुतोष झा, हिंदू सनातन संस्था के राष्ट्रीय प्रवक्ता अभय वर्तक, शंकराचार्य त्रिकाल भवंत सरस्वती, बजरंग दल के कोकण प्रांत से गौतम रावरिया, एडवोकेट संतोष दुबे, ह.भ.प. भगवान महाराज आव्हाड, युवा वारकरी ह.भ.प. ईश्वरजी महाराज नागरे सहित विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। आयोजकों के अनुसार, आंदोलन के दौरान हजारों लोगों ने ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। ज्ञापन कलेक्टर और वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों को सौंपा गया तथा आगे मंत्रालय तक भी पहुंचाने की बात कही गई। समिति के पदाधिकारियों ने कहा कि उनकी मांगों पर उचित कार्रवाई नहीं होने की स्थिति में आंदोलन को राज्यव्यापी और राष्ट्रीय स्तर पर आगे बढ़ाया जाएगा।

सूखे से निपटने में महायुति सरकार विफल, शीतकालीन सत्र में कांग्रेस उठाएगी पानी का संकट: हर्षवर्धन सपकाल



मुंबई। महाराष्ट्र में सूखे और पेयजल संकट को लेकर कांग्रेस ने भाजपा महायुति सरकार पर निशाना साधा है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल ने आरोप लगाया कि राज्य सरकार के पास सूखे से निपटने के लिए कोई ठोस योजना नहीं है और केवल खोखली घोषणाएं की जा रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के साथ-साथ शहरों में भी पेयजल की गंभीर समस्या है, जबकि किसान आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि कांग्रेस आगामी शीतकालीन विधानसभा सत्र में सूखे और पानी की किल्लत के मुद्दे पर सरकार से जवाब मांगेगी।

मुंबई स्थित कांग्रेस मुख्यालय तिलक भवन में शुक्रवार को पार्टी प्रभारी डॉ. सिरिवेल्ला प्रसाद और प्रदेश अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल की प्रमुख उपस्थिति में विभिन्न विभागों एवं प्रकोष्ठों के अध्यक्षों की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सचिव रेहाना चिश्ती, प्रदेश कांग्रेस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष (संगठन एवं प्रशासन) एडवोकेट गणेश पाटील और प्रदेश महासचिव अभिजीत सपकाल सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। बैठक में आगामी छह महीनों के लिए कार्ययोजना तैयार करने और संगठन को आक्रामक तरीके से सक्रिय करने के निर्देश दिए गए। सभी विभागों एवं प्रकोष्ठों को अगले चार दिनों में अपना छह महीने का कार्ययोजना प्रस्ताव प्रस्तुत करने को कहा गया।

बैठक के बाद मीडिया से बातचीत में सपकाल ने कहा कि उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के गृह शहर ठाणे में भी पेयजल की गंभीर किल्लत है। राज्य के कई अन्य शहरों में भी हालात चिंताजनक हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि आम नागरिकों को पानी उपलब्ध कराने के बजाय सरकार की दिलचस्पी टैंकर लॉबी को फायदा पहुंचाने में अधिक दिखाई देती है। किसानों की स्थिति पर चिंता जताते हुए उन्होंने कहा कि संकटग्रस्त किसानों को केवल पांच हजार रुपये देकर उनकी समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता। राज्य सरकार ने 310 तालुकों में सूखा घोषित किया, लेकिन प्रभावित किसानों तक पर्याप्त सहायता पहुंचाने में विफल रही है। केंद्र सरकार ने भी महाराष्ट्र को अपेक्षित मदद नहीं दी है।

भाजपा विधायक महेश बालदी की सदस्यता तत्काल रद्द करने की मांग

सपकाल ने भाजपा विधायक महेश बालदी की विधानसभा सदस्यता तत्काल रद्द करने की मांग भी उठाई। उन्होंने कहा कि अलीबाग की अदालत द्वारा बालदी को तीन वर्ष के सश्रम कारावास की सजा सुनाए जाने के बाद विधानसभा अध्यक्ष को उनकी सदस्यता के संबंध में तत्काल निर्णय लेना चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस विधायक सुनील केदार को सजा मिलने के बाद उनकी विधानसभा सदस्यता तुरंत रद्द कर दी गई थी। इसी तरह राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता भी सजा के बाद 24 घंटे के भीतर रद्द कर दी गई थी और उन्हें सरकारी आवास खाली करना पड़ा था। सपकाल ने सवाल उठाया कि भाजपा के नेताओं और विपक्षी नेताओं के मामलों में अलग-अलग मापदंड क्यों अपनाए जा रहे हैं। उन्होंने मंत्री माणिकराव कोकाटे के मामले का भी उल्लेख करते हुए सरकार पर दोहरे रवैये का आरोप लगाया।

NSUI ने शुरू किया सोशल मीडिया अभियान

इस अवसर पर नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन ऑफ इंडिया (NSUI) की ओर से युवाओं और विद्यार्थियों की आवाज को मंच देने के उद्देश्य से सोशल मीडिया अभियान की शुरुआत की गई। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल, NSUI के प्रदेश अध्यक्ष सागर सालुंखे और आकाश रजावत की उपस्थिति में अभियान का शुभारंभ हुआ। महाराष्ट्र से शुरू किए गए इस अभियान को आगे देशभर में चलाने की योजना है।

श्वास नली में फंसी मूंगफली बनी जानलेवा, जसलोक के डॉक्टरों ने बिना सर्जरी बचाई 23 महीने के बच्चे की जान

एडवांस्ड ब्रोंकोस्कोपी और क्रायो-टेक्नोलॉजी से निकाला मूंगफली का टुकड़ा, सफल उपचार के बाद बच्चा स्वस्थ



मुंबई। जसलोक हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के डॉक्टरों ने चिकित्सा क्षेत्र में उन्नत तकनीक का इस्तेमाल करते हुए 23 महीने के बच्चे पृथ्वीक खेडेकर की श्वास नली में फंसी मूंगफली को बिना सर्जरी सफलतापूर्वक बाहर निकाल लिया। डॉक्टरों ने फ्लेक्सिबल ब्रोंकोस्कोपी और क्रायो-टेक्नोलॉजी की मदद से यह जटिल प्रक्रिया पूरी की। उपचार के बाद बच्चा स्वस्थ है। बच्चे को लगातार खांसी, सांस लेने में परेशानी, बुखार और उल्टी की शिकायत के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया था। परिजनों के अनुसार, मूंगफली खाते समय उसका एक टुकड़ा श्वास नली में फंस गया था। प्राथमिक उपचार में आधा टुकड़ा निकल गया, लेकिन शेष हिस्सा बाईं मुख्य श्वास नली में फंसा रह गया। जांच में इसके कारण फेफड़े में हवा भरने और आसपास सूजन की समस्या सामने आई।

बच्चे की कम उम्र और प्रक्रिया की जटिलता को देखते हुए डॉक्टरों ने विशेष सावधानी बरती। पहले वर्चुअल ब्रोंकोस्कोपी से मूंगफली की स्थिति का पता लगाया गया। इसके बाद 4 मिमी फ्लेक्सिबल ब्रोंकोस्कोप और 1.1 मिमी क्रायोप्रोब की सहायता से फंसे हुए टुकड़े को सुरक्षित बाहर निकाला गया। पूरी प्रक्रिया बिना किसी सर्जरी या चीर-फाड़ के संपन्न हुई। इस उपचार में इंटरवेंशनल पल्मोनोलॉजिस्ट डॉ. कुशल चिदगुपकर, पीडियाट्रिक्स विभाग के निदेशक डॉ. फजल नबी तथा एनेस्थीसियोलॉजिस्ट डॉ. चित्रा और डॉ. मोहित की महत्वपूर्ण भूमिका रही। डॉ. कुशल चिदगुपकर ने बताया कि छोटे बच्चों की श्वास नली में बाहरी वस्तु फंसना गंभीर आपात स्थिति हो सकती है। क्रायो-टेक्नोलॉजी की मदद से मूंगफली के टुकड़े को सुरक्षित निकालने और आसपास की सूजन कम करने में सफलता मिली।

अस्पताल के सीईओ जितेंद्र हरयान ने चिकित्सकों की टीम के समन्वय और विशेषज्ञता की सराहना करते हुए कहा कि यह सफलता उन्नत एवं न्यूनतम चीर-फाड़ वाली चिकित्सा सुविधाओं के प्रति अस्पताल की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

(कहानी)

पानी





पंकज तिवारी

रमई कका बाएँ हाथ से आँख पर घेरा बनाते आसमान की ओर निहार रहे थे। धागे से बँधा चश्मा कान पर लटक रहा था। बादल कहीं से भी नजर नहीं आ रहा था, ऊपर से घाम सिर चढ़कर नाच रहा हो जैसे। छाँव की तलाश में कका वृक्ष की ओट में तो थे पर बिना पत्तों का वह वृक्ष खुद भी किसी छाँव की तलाश में बेचैन था। बेचैनी कका के माथे से होते हुए जमीन तक टपक रही थी। ऐसे ही हर दिन कुछ न कुछ टपक ही रहा होता था उनके जीवन में। कका जीवन को लेकर निराश हो चुके थे। भैंस लिए सुबह-सुबह चराने तो आ गये थे पर घास नदारद थी। भैंस रह-रह कर बमक जा रही थी जबकि कका उसकी तरफ ध्यान ही नहीं दे रहे थे। उन्हें पता था कि आसपास किसी के भी खेत में कोई फसल तो है नहीं फिर कोई चिल्लाने से रहा, बाकी भैंस को ईश्वर ने पेट दिया है तो भोजन भी देंगे। रहम कौन होते हैं किसी को खिलाने वाले?

कका सोचने लगे जब गाँव में तालाब हुआ करता था। जगह-जगह गड्ढे हुआ करते थे। हर दरवाजे की शोभा होता था इनारा, कुआँ जिसका ठंडा पानी करेजा तर कर देता था। लिजुरी से पानी निकाल कर हाथ-पैर धुलते ही मन महकते पुष्प सा खिल उठता था, स्नान के बाद तो धन्य हो जाता था इंसान। कुएँ के पास नीम, आम, कटहल या जामुन का पेड़ जरूर होता था, जहाँ न चाहते हुए भी इंसान सुस्ता लेता था, चार लोग हरहमेश गपियाते रहते थे। हंसी-खुशी उठने-बैठने का फल यह होता था कि ऊगर-सूगर जैसी बिमारियों का नामोनिशान तक नहीं था। दिन कितने हसीन हुआ करते थे। बचपने में लोग पूरे गाँव में कहीं भी घूमते हुए खाना खा लेते थे, कहीं भी गुड़ पानी माँग कर पी लेते थे और किसी के दरवाजे पर बिछी खटिया पर ही दोपहर की नींद मार लेते थे। पूरा गाँव अपना ही घर होता था। सारी बातें सोचते हुए कका अंदर से तड़प उठे थे और तुलना करने लगे थे अब के समय से। कका उन लोगों में से थे जो प्रकृति के गोंद में ही उठते, खेलते और सोते थे और जिनके आँखों के सामने से ही धीरे-धीरे प्रकृति के वजूद पर संकट के बादल मंडराने लगे थे। हालांकि लोग समझ नहीं पा रहे थे कि संकट प्रकृति के लिए है या फिर हमारे ही जीवन के लिए पर होशियार लोग अपने आज को खुशहाल बनाने के चक्कर में आने वाले कल को जीते जी चबा जाने के फेर में थे।

बारिश महीनों होती थी पर गाँव में किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता था हाँ घर कच्चे जरूर थे पर लोग समय से उसे नरिया, खपड़ा, पिड़ोर लगा कर संवार और सम्हाल लेते थे। पानी ज्यादा होने पर छोटी और बड़ी दोनों नहरों को खोल दिया जाता था। ताल में धान जो गर्दन तक के पानी में खुशी-खुशी लहरा रहे होते थे अचानक से डूब जाते थे, साँस अब टूटी कि तब वाली नौबत आ जाती थी पर जल्दी ही गाँव वाले मिल कर रास्ता बना लेते और पानी को तालाबों, गड्ढियों तक पहुँचा देते थे। सारा संकट सब मिलकर ओझ लेते थे। जिंदगी फिर से खुशहाल हो जाती थी। तालाबों में बारहों महीने खूब पानी रहा करता था। जानवर, मनुष्य सभी मज़े से जीवन जी रहे होते थे, सभी एक-दूसरे के साथ और एक दूसरे के लिए जी रहे होते थे। हर तरफ लोक धुनों पर थिरकते लोग मगन हो अपने कामों में लगे रहते थे। लगन, बियाह, मड़ए हर पर्व के लिए गीत थे। भैया-बचवा जैसे मीठे-मीठे शब्दों का साथ होता था, कान हमेशा मधुरी बातें ही सुनने का आदी था, मगन रहा करता था हरदम। भाई का भाई से झगड़ा भी होता था खूब होता था, बात शब्दों के कौवा-झार तक आ जाती थी पर रात का खाना दोनों भाई साथ ही खाते थे। स्नेह, दुलार की एक अलग ही दुनिया हुआ करती थी कि अचानक समय बदलने लगा, लोग बदलने लगे, सोच बदलने लगी। सामूहिक विकास के स्थान पर 'अपना काम बनता भाड़ में जाए जनता' वाली बात पाँव पसारने लगी और अब खेती न करने वाले लोगों को भी खेत कम पड़ने लगा था। देशीपन, देहातीपन और मस्ती में जीने वालों को गँवार समझा जाने लगा था। पैसे और हैसियत देखकर रिश्ते बनाए और बिगाड़े जाने लगे थे। बड़े-बुजुर्ग समझाने का प्रयास भी करते तो उनके सोच को पिछड़ा बता कर दबा दिया जाता था।

धीरे-धीरे मजबूरी में ही सही लोगों को अपने चेहरों पर मुखौटों की आवश्यकता आन पड़ी थी। खेती, बारी, तालाब, कुओं से जो संपन्नता झलकती थी अब उसका स्थान रूपया लेने लगा था और लोग गाँव छोड़ शहर को भागने लगे थे। गाँव से लोग गये तो धीरे-धीरे रौनक भी जाने लगी। बड़े-बड़े घर छोटे-छोटे तालों के भरोसे लटकने लगे थे। दरवाजों पर झाड़-झंखाड़ उगने लगे थे। जरूरी सामानों की पूर्ती हेतु पेड़-पौधों पर ग्रहण लगने लगा था, तालाब गड्ढे अब दरवाजे की शोभा को बिगाड़ने वाले नजर आने लगे थे। कुएँ तो अब खूंटी पर टंगें बेकार पड़े कपड़े की भांति हो गये थे जिसे जल्दी ही वहाँ से भी हटा दिया जाना था। पानी के लिए अब पंपिंग सेट और बड़े-बड़े नल आ गये थे फिर किसे इतनी फुर्सत थी कि लजुरी और बाल्टी लिए पानी निकालने हेतु मशक्कत करे? गाय भैंस पालना भी भारी हो गया था। लोग अब पढ़े-लिखे हो गए थे। दूध का हिसाब भैंस के खान-पान से लगाया जाने लगा था, जहाँ जानवरों का खाना, चारा मिलने वाले दूध से ज्यादा महँगा पड़ने लगा था ऊपर से मेहनत सो अलग। बैल भी भारी लगने लगे थे। दस दिनों के जुताई हेतु साल भर बैठ के खाते थे। आखिर कौन पड़ता इन पचड़ों में? शहरों में छोटे से जगह पर जहाँ भाई-भाई से खोराकी लेने लगा था भला बैलों को कैसे बक्स देता फलतः संकट के बादल यहाँ भी पहुँच गये। अब गाँवों में ट्रैक्टर हरहराने लगे थे। हरहराती हवा अब नोहर होने लगी थी। कका या ऐसे ही और भी बुजुर्ग अनायास ही रो पड़ते थे। उन्हें रोज खर्च हो रहे अपने दिनों से ज्यादा नष्ट होती प्राकृतिक संपदाओं से दुख था पर उससे भी ज्यादा दुख था कि वे बस बेबस हो देख रहे थे, कर कुछ भी नहीं पा रहे थे। देखते ही देखते पेड़-पौधे बोनसाई में बदलने लगे थे। ताल-तलैया सिमटते हुए किताबों में चले गए थे जबकि फरुहा, कुदाल, हल अब संग्रहालयों की शोभा बढ़ाने में लगे हुए थे। सूख चुकी धरती को अब पानी की बहुत जरूरत थी। गाँव भर में बिमारियाँ फैलने लगी थी। आज तो कका को भी आस थी पर शाम हो आई बदरी नहीं आई। सूखे नैन और पाथर सा दिल लिए कका घर आ गए। बहू खाना परस गई पर उनसे खाया नहीं गया, वैसे ही उठ गए थे कका।

अन्न का अपमान आज के पहले तक कभी नहीं किया था कका ने..। कका अपने बिस्तर पर आ गए थे और पड़े-पड़े पता नहीं क्या से क्या सोचे जा रहे थे। हजार सपने लिए कका को नींद कब आ गई नहीं पता?

रात को अचानक से इतनी बारिश हुई कि छोटी और बड़ी दोनों नहरों को एक साथ खोल देना पड़ा। हरहराती हवा के साथ पानी की हरहराहट से गाँव के लोग अंदर तक काँप उठे। खेतों से चढ़ता हुआ पानी अब गाँव तक आ चुका था। पूरा का पूरा गाँव डूबने लगा था। भगदड़ मच गई थी। हाहाकार मच उठा था, लोग जो अब तक चैन की नींद सो रहे थे, बेचैन हो उठे थे जबकि कका, हमेशा से बेचैन रहने वाले कका हमेशा-हमेशा के लिए चैन की नींद सो चुके थे।

हरिशंकर राढ़ी की तीन गजलें

हरसू ही उत्पात चलेगा क्या कर लोगे बाऊजी ?
घात और प्रतिघात चलेगा क्या कर लोगे बाऊजी?
बाहर संसद से आ करके तुमको खूब सिखाएँगे
अंदर लातमलात चलेगा क्या कर लोगे बाऊजी ?
जब तक राशन के बदले तुम वोट थमाते जाओगे
तब तक ये खैरात चलेगा क्या कर लोगे बाऊजी?
तख्ते – ताऊस पर बैठी चालाकी ठट्ठे मारेगी
घुटनों पर ज़ज़्बात चलेगा क्या कर लोगे बाऊजी?
मंदिर-मस्जिद, गुरूद्वारे तो शाम ढले सो जाएँगे
ठेका सारी रात चलेगा क्या कर लोगे बाऊजी?
तुम पी-एच.डी. कर लो चाहे कितने नंबर ले आओ
इंटरव्यू में नात चलेगा क्या कर लोगे बाऊजी?
सत्ता में अज्ञात और विख्यात नहीं चल पाता है
इसमें बस कुख्यात चलेगा क्या कर लोगे बाऊजी?

(2)

जिसे हो घूमते लेकर, असल चेहरा नहीं है।
अभी तक आईने में, ठीक से देखा नहीं है।
न थैले में तुम्हारे घी, भरा-मिर्चा*, न गुड़ ही
यक़ीनन, गाँव के घर में तुम्हारी माँ नहीं है।

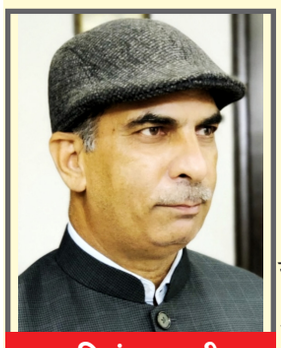

हरिशंकर राढ़ी

पसीना, खून, किडनी बेचना पड़ता यहाँ पर
करोगे क्या यहाँ, गर जेब में पैसा नहीं है?
मुसीबत से निपटकर तुम लिखोगे डायरी में
हमारे शह्र में अब, एक भी रिश्ता नहीं है।
खलीफा बुर्ज बनवाकर शिकायत कर रहे हैं--
कहीं जंगल, नदी, पर्वत, खुला रस्ता नहीं है।
बहुत मन हो रहा था फिर वही मैं लौट जाऊँ
मगर सबने बताया -- गाँव अब वैसा नहीं है।
भले हमदम नहीं, मरहम नहीं, अपना नहीं है
मगर मैं छोड़ दूँ उम्मीद भी, ऐसा नहीं है।

*मिर्च का अचार

(3)

किसी का दिल किसी के दर्द से बेकल नहीं है
किसी मजलूम की खातिर कोई संबल नहीं है।
मिलेंगे हर तरह के जानवर ऊँचे भवन में
सही पूछो शहर - सा दूसरा जंगल नहीं है।
निकलकर आ गया है राजधानी में वहाँ से
बहुत ढूँढ़ा जहाँ था, अब वहाँ चंबल नहीं है।
उसे मालूम है - सच बोलना अच्छा न होगा
इलेक्शन जीतना है और वह पागल नहीं है।
सिहरता हूँ कभी तो ओढ़कर मैं लेट जाता
तेरी यादों से बेहतर माँ कोई कंबल नहीं है।

कविता के गुर फोटोफ्रेम



सन्दीप तोमर
नई दिल्ली



तिवारी जी तो याद हैं न! अरे हाँ, वही साइकिल की सवारी सीखने वाले। साइकिल की सवारी तो उस दिन ताँगे के नीचे आने से छूट गई, लेकिन पता नहीं कैसे उन्हें कविता लिखने का शौक लग गया। दोहा, सोरठा, चौपाई सबकी चाशनी तलाशने लगे। सूर, तुलसी, जायसी सबको पढ़ डाला। प्रयोग पर प्रयोग करते रहे, हर प्रयोग का विधान पढ़ते रहे। इसी क्रम में छायावाद पर अटक गए और कई कवियों को गटक गए।

पता नहीं, उन्हें हमारे ज्योतिप्रसाद से ज्योति बनने तक के सफर का कैसे पता चला कि एक दिन सुबह-सुबह हमारे प्रांगण में आ धमके।

हमने बैठाया और कहा, "फरमाइए!"

तिवारी जी बोले, "आप कविता कैसे लिखते हो?"

हम सकपकाए। अब इन्हें कैसे बताएँ कि हमें विचार कहाँ बैठकर आते हैं! आप समझ गए तो अपने तक ही सीमित रखना, वरना इज्जत का पलीता बँध जाएगा। हमने बात टाली, "तिवारी जी, मसला बताइए।"

वे बोले, "कविवर, कविता लिखना सीख रहा हूँ, लेकिन एक ढंग की कविता नहीं लिख पाया। आपने तो बहुत-सी कविताएँ लिखी हैं। कोई एक-आध ढंग की भी लिखी होगी। बताइए कैसे लिखी? मैं तो एक भी छंद नहीं लिख पा रहा हूँ।"

हमने उनके कविता गुरु का नाम सुझाया। कविता के गुरु नहीं, कविता सिखाने वाले गुरु। हाँ-हाँ, वही इकलौते गुरु अशोक चक्रपाणी जी!

हमने बताया, "गुरुवर कान में मंत्र फूँकते हैं और इंसान तंत्र भूलकर यंत्र हो जाता है। कविता मुख से निकलती है, अंगुलियाँ कंप्यूटर पर थिरकती हैं और रचना बाहर आ जाती है।"

तिवारी जी बोले, "क्या वो छंदमय कविता कहते हैं?"

हमने कहा, "तिवारी भैया, वो जो कहते हैं, कविता हो जाती है और आप छंद में अटके हो! निराला का शुक्रिया अदा करो, जिन्होंने छंद के गणित से आजादी दिलाई। कितनों का करियर बन गया! न आते कविवर निराला तो अपना पक्का था दिवाला!"

छंद का भूत सिर से उतरा तो कविता सीखने की ललक बाकी रही।

हमने कहा, "पहला मंत्र है- कविता लिखने में समय मत खोना, वरना सारी जिंदगी पड़ेगा रोना। जो शब्द पकड़ो, लिख मारो। भाव अगर पाठक समझ गया तो कविता कचरा बन जाएगी!"

तिवारी जी गौर से सुन रहे थे और हम बाबा आशाराम की तरह बक रहे थे।

"दूसरा गुर यह है कि सोचकर लिखोगे तो सोचते रह जाओगे। बिना सोचे लिखो। सोचने का काम पाठक या समीक्षक करेगा।

तीसरा मंत्र- कविता के इतने हिस्से कर दो कि पाठक उसमें दर्शनशास्त्र के दर्शन करने लगे। पंक्तियों का अर्थ आपस में न मिले तो गहराई और मिल जाए तो सतहीपन!

अंतिम मंत्र- कविता खुद पढ़ो। बकवास लगे तो समझो काम हो गया, कविता मुकम्मल हुई!"

हमने पूछा, "तिवारी जी, इतनी दिलचस्पी है तो गुरुवर से ही मिलिए। हमसे क्या सीखना!"

तिवारी जी चलने लगे तो हमने आखिरी गुरुमंत्र दिया, "कविता छपने से पहले खुद को कवि मत कहना। छपने के बाद आलोचक कवि कह दे तो विनम्रता से मना मत करना। साहित्य में विनम्रता से बड़ा कोई प्रचार नहीं!"

तिवारी जी चले गए। हम सोचने लगे—कविता लिखना जितना कठिन है, उससे कहीं आसान उसे कविता साबित करना है। बस ऐसा लिखो कि पाठक अपनी नासमझी पर शर्मिंदा हो और कवि अपनी प्रतिभा पर इतराए।

आखिर गुरु गुड़ ही रहता है, चेला शक्कर बनने की कोशिश करता है; लेकिन आजकल गुड़ की पहचान चेले से और शक्कर की मिठास समीक्षक की कलम से तय होती है!



जगदीश सिंह के पत्नी का जन्मदिन था। रागिनी जो उनके बड़े बेटे की पत्नी है, ने दिनभर लगकर बड़े अच्छे से घर पर ही पूरी पार्टी की तैयारी की है। पनीर माखनी, विरयानी, पूड़ी, पालक की भांजी, छोले-भटूरे, गुलाब जामुन, माँ जी के पसंद की लौकी का हलवा। इतनी फरमाइशें पूरा करने के बाद जगदीश सिंह ने बड़े रौब से रागिनी से कहा –"बहू ! अपनी अम्मा से पूछ लेना कुछ और मन होगा उनका तो बना देना। आखिर सास है तुम्हारी, इतना हक तो है कि अब पसंद का भोजन बैठकर खाए।"

रागिनी- "जी पापा जी।"

जगदीश– "हाँ, बहू हो तुम, कर्तव्य है तुम्हारा। जरा दही-बड़े भी बना देना। पसंद है उसको।"

ये भनक गिरिजा देवी के कानों में पड़ी। वह बहू को रोकते हुए बोली, "ये मेरे नहीं अपने चक्कर में है। अब कुछ और नहीं बनाना है। मुट्ठी भर के सिर्फ परिवार के लोग है। कितना खाएंगे? तुम भी जाओ तैयार हो जाओ।"

दोनो बेटे ऑफिस से आ गये। ससुराल से बेटी भी आ गई। सभी बच्चों ने अपने-अपने गिफ्ट दिए। हँसी ठहाका चल रहा था। रागिनी भी एक साड़ी लिए एक कोने में खड़ी थी। उनके तीनों बच्चे उसे साइड करते जाते । अलग-अलग पोज में फोटो खिचाते। उसके पति ने उसे बुलाया और अपने माँ के साथ उसकी भी फोटो ली। उनके सभी बच्चे एक साथ फोटो लेने के लिए एक साथ आने लगे। रागिनी भी आगे बढ़ी। अपनी पत्नी के साथ बैठे जगदीश सिंह ने उसे हाथों से दूर होने का इशारा किया और खिलखिलाते हुए बोले, "अब एक फोटो मेरे पूरे परिवार का।"

यह सुनते ही रागिनी सन्न रह गई। इस बात पर और किसी ने गौर किया या नहीं रागिनी को नहीं मालूम लेकिन उसके मानस पटल पर पत्थर की लीक बन गई।

उधर फोटो सेसन चलता रहा और इधर रागिनी के कानों में जगदीश सिंह की बातें उसके हृदय में शूल बनकर चुभती रहीं। मायके से आते समय उसके परिवार वालों ने समझाया था कि बेटी उस घर-परिवार को ही अपना घर-परिवार समझना पर यहाँ की तो तस्वीर ही कुछ और है। वह सोच रही थी, मैं कौन हूँ? यदि मैं बहू हूँ तो परिवार क्यों नहीं हूँ और परिवार हूँ तो फैमिली फोटो में क्यों नहीं हूँ?

रागिनी सबको परोसने खिलाने में लग गई। एक हफ्ते में एक बड़ा-सा फैमिली फोटोफ्रेम बैठक की दीवार की सुंदरता बढ़ाने लगी। जो रागिनी को हर रोज याद दिलाती कि यह उसका परिवार नहीं है या वह इस परिवार की नहीं। समय के साथ धीरे-धीरे वह यह बात भूल गई। उसके दो बच्चे हो गए। वह पूरे परिवार के साथ रच-बस गई। पूरी जिम्मेदारी को बखूबी निभाती रही।

सात साल बाद देवर की शादी हुई। घर में फिर चहल-पहल का माहौल बन गया। देवर अपनी पत्नी को लेकर चार दिन बाद दिल्ली चला गया। एक हफ्ते बाद बैठक की सफाई करते समय रागिनी ने देखा कि फैमिली फोटोफ्रेम बदल गई है। एक नई फोटोफ्रेम लग गई है, जिसमें सास-ससुर, पति, ननद, ननदोई, रागिनी के दोनो बच्चे, ननद के दोनों बच्चे और सेंटर में उसके देवर और देवरानी है। कोई नहीं रहता है तो उसकी निगाहे बार-बार फोटो फ्रेम पर जाती थी। वह उसमें अपनी जगह तलाश रही थी। सात साल देकर भी उसे फैमिली फोटोफ्रेम में जगह नहीं मिली। उसकी देवरानी का मुस्कुराता चेहरा उसे ठेंगा दिखा रहा था।

सिंधु 'सनातनी'
मुंबई, महाराष्ट्र

चुप-चुप क्यों रहते हो तुम

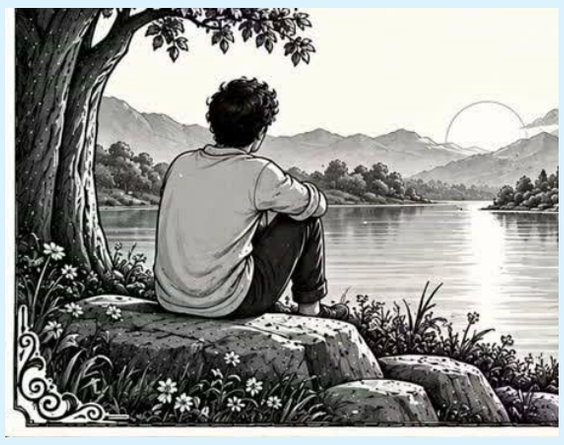

चुप-चुप क्यों रहते हो तुम
क्यों दर्द इतना सहते हो तुम
ख़ामोशी के साये में क्यों
खुद को तुम रखते हो गुम
आखिर क्या मजबूरी है
क्यों दर्द को सहना ज़रूरी है



संजीव कुमार घोष

जीवन के सूनेपन की ये
कैसी कथा अधूरी है ?
दिल में तुम तड़पोगे कब तक
उलझन से निकले न अब तक
भंवर जाल में फंसे हुए हो
देख रहा है ये सारा जग
लब तक अपने आने दो
सारी परतें खुल जाने दो
जो शिकवे गिले थे उन सबको
आँसु में बह जाने दो
अच्छा साथ निभाया है
दिल को भी समझाया है
मुस्कान तुम्हारे होंठों की
क्यों फूलों सा मुरझाया है ?
कलियों सा खिलना सीखो
भौरों सा फिरना सीखो
अरमानों के पंख लगाकर
पक्षी सा उड़ना सीखो
अच्छी नहीं तन्हाई है मिलना
नियामत-ए-खुदाई है
दिल का हाल सुनाने वाला
ही सच्चा सौदाई है
नीर कहे नहीं गुमसुम रहना
जीवन को तुम खुश रह जीना
खुशियां बाँटो और बढ़ेंगी
जग को भी तुम खुश कर देना

मालिक जयेश जग्शी गाला हेतु प्रकाशक, मुद्रक **अश्विनी कुमार दुबे** द्वारा मोदी प्रिंटर्स, 24 बोमनजी लेन, फोर्ट, मुंबई-400001 (महाराष्ट्र) से मुद्रित कर महाराष्ट्र ग्रेन स्टोर्स, 28, डॉ. भगवानदास इंद्रजीत रोड, वालकेश्वर, मलबार हिल, मुंबई-400006 से प्रकाशित किया।
संपादकः **अश्विनी कुमार दुबे** (पीआरबी अधिनियम के तहत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी है, न्याय क्षेत्र मुंबई), सहसंपादकः सुजीत मिश्रा ('दै.'राष्ट्रीय स्वाभिमान 'में सभी लोग सहयोगात्मक और अवैतनिक तौर पर कार्यरत हैं)
● आर.एन.आई.:MAHHIN/2008/24084 ● ईमेलः rastriyaswabhiman@gmail.com ● भ्रमणध्वनि क्र. +919224733113

बीएचयू में 'वैश्विक पर्यावरणीय परिवर्तन के युग में पारिस्थितिक अनुसंधान' पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ

कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने वैज्ञानिकों से शोध को समाज और नीति-निर्माताओं तक सरल भाषा में पहुंचाने का किया आह्वान

आरएस नेटवर्क। डॉ. उदय शंकर भगत



वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के मालवीय मूल्य अनुशीलन केंद्र में गुरुवार को 'वैश्विक पर्यावरणीय परिवर्तन के युग में पारिस्थितिक अनुसंधान' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का शुभारंभ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने किया। सम्मेलन का आयोजन बीएचयू के वनस्पति विज्ञान विभाग, विज्ञान संस्थान तथा इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर ट्रॉपिकल इकोलॉजी (ISTE) के संयुक्त तत्वावधान में किया जा रहा है। इस अवसर पर सम्मेलन की सार-संक्षेप पुस्तक (एब्सट्रैक्ट बुक) का विमोचन किया गया तथा सोसाइटी के वरिष्ठ सदस्यों को सम्मानित किया गया।

सम्मेलन दो प्रमुख विषयों पर केंद्रित है। इनमें 'जनमानस और पृथ्वी के लिए पारिस्थितिक विज्ञान' तथा 'ग्रहीय विज्ञान के लिए अनुसंधान, नवाचार और जलवायु कार्रवाई' शामिल हैं।

उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. अजित कुमार चतुर्वेदी ने कहा कि अकादमिक विषयों को सीमित दायरे से बाहर निकालकर नीति-निर्माताओं और आम समाज तक सरल भाषा में पहुंचाने की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों को केवल आंकड़ों के विश्लेषण और भविष्यवाणी तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि व्यावहारिक हस्तक्षेप और इंजीनियरिंग दृष्टिकोण अपनाकर समस्याओं के समाधान की दिशा में काम करना चाहिए। उन्होंने वनस्पति विज्ञान और प्राणी विज्ञान जैसे पारंपरिक विषयों को बनाए रखते हुए विभिन्न विभागों के सहयोग से स्नातकोत्तर स्तर पर नए और केंद्रित पाठ्यक्रम शुरू करने का सुझाव भी दिया।

सम्मेलन के मुख्य अतिथि एमिटी विश्वविद्यालय, पंजाब के पूर्व कुलपति प्रो. आर. के. कोहली ने युवा पारिस्थितिकीविदों को भारत का भविष्य बताते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने सम्मेलन के विषय और आयोजन की सराहना करते हुए इसे इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर ट्रॉपिकल इकोलॉजी की सक्रियता एवं गतिशीलता का परिचायक बताया।

विशिष्ट अतिथि एवं अशोक ट्रस्ट फॉर रिसर्च इन एरिया इकोलॉजी एंड द एनवायरनमेंट के संस्थापक प्रो. के. एन. गणेशैया ने भारतीय वैज्ञानिक परंपरा और संस्कृति के बीच गहरे संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने वैदिक काल के गणितीय सूत्रों तथा पवित्र उपवनों (सेक्रेड ग्रोव्स) जैसी पारंपरिक संरक्षण प्रणालियों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत में प्रकृति और जैव विविधता का संरक्षण सदैव सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्यों से जुड़ा रहा है।

विज्ञान संस्थान के संकाय प्रमुख प्रो. ए. डी. सिंह ने कहा कि वैश्विक पर्यावरणीय बदलावों से निपटने, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने और सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने के लिए ऐसे सम्मेलन एवं जन-जागरूकता कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं। वहीं, पर्यावरण एवं धारणीय विकास संस्थान (आईईएसडी) के निदेशक प्रो. ए. एस. रघुवंशी ने जैव विविधता और मानवता की सुरक्षा के लिए संवेदनशील पारिस्थितिक क्षेत्रों के सुव्यवस्थित प्रबंधन को अनिवार्य बताया।

इंटरनेशनल सोसाइटी फॉर ट्रॉपिकल इकोलॉजी के अध्यक्ष डॉ. एकलव्य शर्मा ने सोसाइटी की 70 वर्षों की गौरवशाली यात्रा (1956-2026) पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पारिस्थितिकी तंत्र को केवल संरक्षण तक सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि विकास और जलवायु अनुकूलन के लिए प्राकृतिक बुनियादी ढांचे के रूप में भी देखना चाहिए।

सम्मेलन के संयोजक प्रो. राम सागर ने कहा कि वर्तमान समय एंथ्रोपोसीन युग के रूप में जाना जाता है, जहां अनियमित वर्षा, हीटवेव, लू और जैव विविधता में लगातार कमी जैसी चुनौतियां भारत के सामने गंभीर वास्तविकता बनकर उभरी हैं। इन चुनौतियों से निपटने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान और सामूहिक प्रयासों को बढ़ावा देना आवश्यक है।

समारोह में उष्णकटिबंधीय पारिस्थितिकी के क्षेत्र में आजीवन योगदान देने वाले उन वरिष्ठ सहयोगियों को भी सम्मानित किया गया, जो स्थापना काल से ट्रॉपिकल इकोलॉजी जर्नल और सोसाइटी से जुड़े रहे हैं। इस अवसर पर आयोजन समिति के सदस्य डॉ. आर. पी. सिंह, डॉ. पी. सी. अभिलाष, डॉ. सुप्रिया तिवारी, डॉ. राजेश कुमार शर्मा, डॉ. कृष्णा सहित स्वयंसेवक एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सनबीम स्कूल लहरतारा की छात्राओं का सीबीएसई राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन

स्केटिंग, कराटे और ताइक्वांडो में पदक जीतकर बढ़ाया विद्यालय और काशी का गौरव, एक छात्रा का एसजीएफआई राष्ट्रीय चैंपियनशिप के लिए चयन



वाराणसी। सनबीम स्कूल, लहरतारा की प्रतिभाशाली छात्राओं ने सीबीएसई राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन करते हुए विद्यालय और काशी का गौरव बढ़ाया है। स्केटिंग, कराटे और ताइक्वांडो में पदक हासिल कर छात्राओं ने अपनी मेहनत, अनुशासन, समर्पण और खेल प्रतिभा का परिचय दिया है।

विद्यालय की कक्षा IX-F की छात्रा वृद्धि माहेश्वरी ने कर्नाटक के बेलगावी स्थित ग्लोबल इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित सीबीएसई राष्ट्रीय स्केटिंग चैंपियनशिप-2026 (अंडर-19) की वन लैप रोड रेस स्पर्धा में रजत पदक जीतकर विद्यालय को गौरवान्वित किया। उनकी इस उपलब्धि के साथ ही 70वीं एसजीएफआई राष्ट्रीय स्पीड स्केटिंग चैंपियनशिप के लिए भी उनका चयन हुआ है। यह प्रतियोगिता 19 से 21 जनवरी 2027 तक बेंगलुरु में आयोजित होगी। इसी क्रम में छात्रा कशिश पटेल ने मध्य प्रदेश के शाजापुर स्थित दिल्ली स्मार्ट पब्लिक स्कूल में आयोजित सीबीएसई राष्ट्रीय कराटे एसजीएफआई चयन चैंपियनशिप-2026 (अंडर-19) में रजत पदक हासिल किया। उनकी इस सफलता ने विद्यालय का मान बढ़ाया है। यह उपलब्धि उनके साहस, आत्मविश्वास, अनुशासन और कठिन परिश्रम का परिणाम है।

वहीं, कक्षा XI की छात्रा हिबा खान ने हरियाणा के पानीपत स्थित बाल विकास प्रोग्रेसिव स्कूल में आयोजित सीबीएसई राष्ट्रीय ताइक्वांडो चैंपियनशिप में अंडर-19 बालिका वर्ग की 63 किलोग्राम भार श्रेणी में कांस्य पदक जीतकर विद्यालय को एक और उपलब्धि दिलाई। उनका प्रदर्शन खेल के प्रति दृढ़ संकल्प और निरंतर अभ्यास का प्रमाण है।

तीनों छात्राओं की सफलता सनबीम स्कूल, लहरतारा में शिक्षा के साथ खेलकूद और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को दिए जाने वाले महत्व को दर्शाती है। विद्यालय प्रबंधन विद्यार्थियों को उनकी रुचि और प्रतिभा के अनुरूप अवसर प्रदान कर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

इस उपलब्धि पर सनबीम समूह के चेयरपर्सन डॉ. दीपक मधोक, वाइस चेयरपर्सन भारती मधोक, डायरेक्टर अमृता बर्मन एवं एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर हर्ष मधोक ने तीनों छात्राओं को हार्दिक बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि छात्राएं भविष्य में भी अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से विद्यालय और देश का गौरव बढ़ाती रहेंगी।

सनबीम स्कूल, लहरतारा के लिए छात्राओं की यह सफलता गर्व का विषय है। उनकी उपलब्धियां साबित करती हैं कि दृढ़ संकल्प, अनुशासन और निरंतर प्रयास से सफलता के नए आयाम स्थापित किए जा सकते हैं।

सिगरा में पुलिस का एक्शन, कैंट स्टेशन के पास हंगामा करने वाली छह महिलाएं गिरफ्तार

पिलर नंबर 60 के पास राहगीरों से अभद्रता और आपसी विवाद की शिकायत पर मिशन शक्ति टीम की कार्रवाई, होटल-लॉज की भूमिका की भी होगी जांच

आर एस नेटवर्क। डॉ. उदय शंकर भगत



वाराणसी। कैंट रेलवे स्टेशन के आसपास सार्वजनिक स्थान पर हंगामा करने और राहगीरों से अभद्रता करने के आरोप में सिगरा पुलिस ने छह महिलाओं को गिरफ्तार किया है। पुलिस आयुक्त के निर्देश पर मिशन शक्ति टीम ने यह कार्रवाई की। पुलिस के अनुसार, महिलाएं पिलर नंबर 60 के पास आने-जाने वाले लोगों को परेशान करने के साथ आपस में विवाद कर रही थीं।

पुलिस उपायुक्त काशी जोन, अपर पुलिस उपायुक्त काशी जोन एवं सहायक पुलिस आयुक्त चेतगंज शुभम जैन के नेतृत्व में प्रभारी निरीक्षक शिवाकांत मिश्र के निर्देशन में अभियान चलाया गया। सूचना मिलने पर उपनिरीक्षक एवं रोडवेज चौकी प्रभारी विकास सिंह मिशन शक्ति टीम के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने महिलाओं को समझाने का प्रयास किया, लेकिन वे शांत होने को तैयार नहीं हुईं। इसके बाद शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए छह महिलाओं को भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) की धारा 170, 126 एवं 135 के तहत गिरफ्तार कर विधिक कार्रवाई शुरू की गई।

पुलिस के अनुसार, पूछताछ के दौरान महिलाएं अपने निवास के संबंध में संतोषजनक जानकारी नहीं दे सकीं। पुलिस का कहना है कि रोडवेज चौकी प्रभारी पहले भी कई बार इन्हें क्षेत्र से हटा चुके हैं, लेकिन कुछ समय बाद ये दोबारा वहां पहुंच जाती थीं।

होटल-लॉज की भूमिका भी जांच के दायरे में

पुलिस सूत्रों के मुताबिक, कैंट स्टेशन क्षेत्र में इस तरह की गतिविधियों के पीछे बिना पंजीकरण, बिना लाइसेंस और निर्धारित मानकों के विपरीत संचालित कुछ होटल एवं लॉज की भूमिका भी जांच का विषय है। आरोप है कि क्षेत्र के कई होटल स्थानीय पहचान पत्र (लोकल आईडी) के आधार पर कमरे उपलब्ध कराते हैं। पुलिस इस व्यवस्था पर सख्ती करने की तैयारी में है। कोतवाल ने होटल संचालकों को चेतावनी दी है कि स्थानीय आईडी पर कमरा उपलब्ध कराने के मामलों में नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर कार्रवाई की जाएगी।

पुलिस का कहना है कि महिलाओं के कथित संरक्षकों की भूमिका की भी जांच की जाएगी और क्षेत्र में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए अभियान लगातार जारी रहेगा।

ये महिलाएं हुईं गिरफ्तार

पुलिस के अनुसार गिरफ्तार महिलाओं में पारो देवी (काल्पनिक नाम), निवासी कुष्ठ सेवा आश्रम, पड़ाव, बहादुरपुर, मुगलसराय, चंदौली (40 वर्ष); सोना (काल्पनिक नाम), निवासी बरंगा, सैयदराजा, चंदौली (48 वर्ष); मुस्कान (काल्पनिक नाम), निवासी अमरा, डीएलडब्ल्यू, रोहनिया, वाराणसी (30 वर्ष); गुलाबो (काल्पनिक नाम), निवासी जयपुर बेल लाइन, बोनगांव, उत्तर 24 परगना, पश्चिम बंगाल (30 वर्ष); फूलमती, निवासी करवदिया, रोहतास, बिहार (52 वर्ष) तथा सबिता, निवासी धनियाकुंडी, भुईधरपुर, आजमगढ़ (50 वर्ष) शामिल हैं।

कार्रवाई करने वाली पुलिस टीम

कार्रवाई में प्रभारी निरीक्षक शिवाकांत मिश्र, उपनिरीक्षक विकास सिंह, उपनिरीक्षक प्रशांत कुमार बंधु, महिला उपनिरीक्षक काजोल सिंह (मिशन शक्ति प्रभारी), महिला उपनिरीक्षक डाली साहू, महिला आरक्षी छाया, महिला आरक्षी दीपांजली, आरक्षी नरेंद्र कुमार एवं आरक्षी अनिल कुमार पटेल शामिल रहे।

काशी के 20 और चौराहों पर लगेंगे हाईटेक सर्विलांस कैमरे, 3.07 करोड़ होंगे खर्च

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर और वाराणसी स्मार्ट सिटी के बीच हुआ एमओयू, कमांड सेंटर से होगी 24 घंटे निगरानी



वाराणसी। काशी में यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने और आम नागरिकों की सुरक्षा मजबूत करने के लिए 20 और प्रमुख चौराहों पर हाईटेक सर्विलांस कैमरे लगाए जाएंगे। इस परियोजना पर टोयोटा किर्लोस्कर मोटर प्राइवेट लिमिटेड की ओर से कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के तहत 3.07 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। इसके लिए शुक्रवार को वाराणसी स्मार्ट सिटी लिमिटेड और कंपनी के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।

सिगरा स्थित त्रिनेत्र भवन में आयोजित कार्यक्रम में महापौर अशोक कुमार तिवारी, नगर आयुक्त एवं स्मार्ट सिटी के सीईओ शाश्वत त्रिपुरारी, मुख्य महाप्रबंधक अमरेंद्र तिवारी तथा टोयोटा किर्लोस्कर मोटर के ईवीपी विक्रम गुलाटी की उपस्थिति में एमओयू का आदान-प्रदान हुआ।

स्मार्ट सिटी और यातायात पुलिस विभाग के सर्वेक्षण के अनुसार, काशी की संकरी सड़कों और प्रतिवर्ष लगभग 7 से 9 करोड़ पर्यटकों के आवागमन के कारण शहर में यातायात का दबाव लगातार बना रहता है। वर्ष 2025 में वाराणसी में लगभग 3,000 सड़क दुर्घटनाएं दर्ज की गईं, जबकि प्रतिदिन यातायात नियमों के उल्लंघन के करीब 500 मामले सामने आते हैं।

शहर के 98 संवेदनशील स्थलों को पहले चिह्नित किया गया था। इनमें से 21 चौराहों पर इंटीग्रेटेड ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम (आईटीएमएस) और एडैप्टिव ट्रैफिक कंट्रोल सिस्टम (एटीसीएस) पहले से स्थापित हैं। अब पुलिस प्रशासन के सर्वेक्षण और अनुरोध के आधार पर शेष 20 प्रमुख चौराहों पर आधुनिक निगरानी एवं यातायात नियंत्रण व्यवस्था विकसित की जाएगी। इन स्थलों का निरीक्षण कंपनी और पुलिस विभाग की संयुक्त टीम कर चुकी है।

कमांड सेंटर से होगी 24 घंटे निगरानी

परियोजना के तहत सभी 20 चौराहों पर लगाए जाने वाले कैमरों को ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क (ओएफएन) के माध्यम से काशी इंटीग्रेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर के ट्रैफिक कंट्रोल रूम से जोड़ा जाएगा। यहां से चौबीसों घंटे लाइव निगरानी की जाएगी। किसी भी सड़क दुर्घटना, यातायात जाम अथवा आपात स्थिति की सूचना मिलते ही संबंधित नजदीकी थाने को तत्काल अलर्ट भेजा जा सकेगा। इससे पुलिस और यातायात विभाग को त्वरित कार्रवाई करने में मदद मिलेगी।

फरवरी 2027 तक पूरा होगा प्रोजेक्ट

निर्धारित कार्ययोजना के अनुसार, इसी महीने उपकरणों की स्थापना और कमीशनिंग का काम शुरू किया जाएगा। दिसंबर में सिस्टम इंटीग्रेशन की प्रक्रिया पूरी करने के बाद फरवरी 2027 तक परियोजना का हैंडओवर करने का लक्ष्य रखा गया है।

परियोजना से हेलमेट, ट्रैफिक सिग्नल और लेन अनुशासन के पालन में 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़ोतरी होने का अनुमान है। वहीं, सिग्नल जंपिंग और ओवरस्पीडिंग के मामलों में 20 से 30 प्रतिशत तक कमी आने की उम्मीद जताई गई है। ऑटोमेटेड निगरानी प्रणाली के माध्यम से यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों की पहचान की क्षमता में भी 50 प्रतिशत से अधिक वृद्धि होने का अनुमान है।

इस परियोजना के पूरा होने के बाद काशी के यातायात प्रबंधन, सड़क सुरक्षा और आपातकालीन पुलिस सहायता व्यवस्था को तकनीकी रूप से और मजबूत बनाने में मदद मिलने की उम्मीद है।

चेतमणि जेम्स एंड ज्वेल्स के चौथे शोरूम का भव्य उद्घाटन, चितईपुर में शुरू हुआ नया प्रतिष्ठान



वाराणसी। बनारस के आभूषण जगत में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले चेतमणि जेम्स एंड ज्वेल्स के नए शोरूम का शुक्रवार, 20 नवंबर 2026 को चितईपुर में भव्य उद्घाटन हुआ। शुभारंभ परिवार के सदस्यों गुंजावती अग्रवाल, विशाल अग्रवाल, राखी अग्रवाल, शिवांग अग्रवाल, अनन्य अग्रवाल, दिव्या अग्रवाल, मणिका अग्रवाल और मशिता अग्रवाल के करकमलों से संपन्न हुआ।

वर्ष 1992 में लहुराबीर से अपनी यात्रा शुरू करने वाले चेतमणि जेम्स एंड ज्वेल्स ने ग्राहकों के विश्वास, गुणवत्ता और आकर्षक आभूषण संग्रह के दम पर बनारस में अपनी अलग पहचान बनाई है। लहुराबीर के बाद रथयात्रा और रविंद्रपुरी में शोरूम स्थापित करने के पश्चात अब चितईपुर में चौथे शोरूम की शुरुआत के साथ प्रतिष्ठान ने विस्तार की दिशा में एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है। कंपनी के डायरेक्टर गुंजन अग्रवाल के अनुसार, चितईपुर और आसपास के क्षेत्रों के ग्राहकों की लंबे समय से यहां शोरूम खोलने की मांग थी। ग्राहकों के प्यार और विश्वास को देखते हुए इस नए प्रतिष्ठान की शुरुआत की गई है, ताकि उन्हें बेहतर सेवाओं और आकर्षक ज्वेलरी कलेक्शन का लाभ अपने क्षेत्र में ही मिल सके।

चितईपुर रोड स्थित एपेक्स हॉस्पिटल के सामने खुले इस नए शोरूम में गोल्ड, डायमंड, रोज गोल्ड, सिल्वर, एंटीक गोल्ड और एंटीक सिल्वर के विविध संग्रह उपलब्ध होंगे। यहां पारंपरिक भारतीय आभूषणों से लेकर आधुनिक एवं समकालीन डिजाइनों तक ग्राहकों को अपनी पसंद और अवसर के अनुरूप अनेक विकल्प मिलेंगे। शोरूम के उद्घाटन अवसर पर विशेष रूप से नया 'RAAVI' कलेक्शन भी लॉन्च किया गया। सोने की खूबसूरती, मीनाकारी की बारीकियों और मोतियों के आकर्षक संयोजन से सजा यह कलेक्शन पारंपरिक भारतीय शिल्पकला और आधुनिक वेस्टर्न डिजाइन का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है। इसमें परंपरा की गरिमा के साथ आधुनिकता का आकर्षक अंदाज देखने को मिलता है।

इस अवसर पर संजू अग्रवाल ने कहा कि ग्राहकों का विश्वास और उनका निरंतर स्नेह ही चेतमणि जेम्स एंड ज्वेल्स की अब तक की यात्रा की सबसे बड़ी पूंजी है। चितईपुर में नए शोरूम की शुरुआत इसी विश्वास को और मजबूत करने का प्रयास है, जिससे अधिक से अधिक ग्राहकों तक प्रतिष्ठान के आभूषण संग्रह और सेवाएं पहुंचाई जा सकें।

तीन सफल शोरूम के बाद चौथे शोरूम की शुरुआत को प्रतिष्ठान की विस्तार यात्रा में महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है। कार्यक्रम के अंत में विशाल अग्रवाल ने उपस्थित अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

गंगा को मिलेगा शोध का आधार, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय और गंगा सेवा समिति के बीच हुआ समझौता



वाराणसी। गंगा की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के साथ उसे शोध एवं अकादमिक पहचान दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की गई है। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र और गंगा सेवा समिति, बलुआ (चंदौली) के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते के तहत गंगा की प्राचीन सभ्यता, संत परंपरा, तीर्थ परंपरा, धार्मिक भूगोल और ग्रामीण गंगा तटों की सांस्कृतिक विरासत पर संयुक्त रूप से शोध एवं संरक्षण कार्य किया जाएगा।

इस पहल का प्रमुख उद्देश्य गंगा से जुड़ी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर को व्यवस्थित रूप से दस्तावेजीकृत करना तथा उसे राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना है। समझौते के अंतर्गत विश्वविद्यालय और समिति संयुक्त शोध परियोजनाएं संचालित करेंगे। इसके अलावा राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, क्षेत्रीय सर्वेक्षण, प्राचीन मंदिरों और तीर्थस्थलों के दस्तावेजीकरण, शोध प्रकाशन तथा डिजिटल अभिलेखागार तैयार करने जैसे कार्य किए जाएंगे।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बिहारी लाल शर्मा ने कहा कि गंगा केवल एक जलधारा नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की जीवनरेखा है। गंगा हमारी वेदों, पुराणों, संतों की वाणी और गांवों के घाटों की लोक संस्कृति में समाहित है। इस समझौते का उद्देश्य गंगा की समग्र विरासत को शोध के माध्यम से प्रमाणों के साथ संरक्षित करना और समाज के सामने प्रस्तुत करना है।

उन्होंने कहा कि गंगा सेवा समिति पिछले 17 वर्षों से बलुआ के पावन तट पर धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से गंगा संरक्षण एवं जनजागरण का कार्य कर रही है। अब विश्वविद्यालय के सहयोग से इस प्रयास को शोध और ज्ञान के क्षेत्र में भी विस्तार मिलेगा।

पश्चिमवाहिनी गंगा के महत्व पर होगा विशेष शोध

इस समझौते में चंदौली के बलुआ गंगा तट को विशेष महत्व दिया गया है। यहां गंगा पश्चिमवाहिनी हैं, जिन्हें धार्मिक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से विशेष पवित्र माना जाता है। इस क्षेत्र की संत परंपरा, तीर्थ परंपरा, धार्मिक भूगोल और ग्रामीण जीवन से जुड़ी सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन किया जाएगा। इसके माध्यम से विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को फील्ड वर्क और प्रशिक्षण का अवसर मिलेगा। वे घाटों, गांवों, प्राचीन मंदिरों और तीर्थस्थलों का प्रत्यक्ष अध्ययन कर सकेंगे।

23 और 24 नवंबर को राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं गंगा महोत्सव

इसी क्रम में 23 और 24 नवंबर 2026 को चंदौली के बलुआ में राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं देव दीपावली गंगा महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। संगोष्ठी का विषय 'भारतीय सभ्यता में गंगा : पश्चिमवाहिनी गंगा की संत परंपरा, धार्मिक भूगोल, सांस्कृतिक विरासत एवं ग्रामीण तटों का संरक्षण' रखा गया है। इसमें देशभर के विद्वान, संत, शोधकर्ता और गंगा भक्त शामिल होंगे।

कार्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा केंद्र के समन्वयक प्रो. दिनेश गर्ग, केंद्र प्रभारी डॉ. ज्ञानेन्द्र शापकोटा, वेद विभाग के आचार्य विजय शर्मा, गंगा सेवा समिति के अध्यक्ष दीपक जायसवाल, कार्यक्रम संचालक अरविन्द पाण्डेय, प्रांजल पाण्डेय और अच्युतकृष्ण त्रिपाठी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति, आचार्यगण एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

इस समझौते को गंगा की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण, शोध को प्रोत्साहन देने और भारतीय ज्ञान परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुंचाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

हिन्दी दैनिक
राष्ट्रीय स्वाभिमान

राष्ट्रीय स्वाभिमान
पत्र व्यवहार:रफ्तार इंडिया एक्सप्रेस, 31/33 पहला महला, पत्रावाला बिल्डिंग, वजु कोटक मार्ग लिंक शहीद भगतसिंह रोड, फोर्ट, मुंबई 400001, भ्र.ध्व. क्र.:9224733113
ईमेल:rastriyaswabhimaan@gmail com

04 मुंबई, शनिवार, 21 नवम्बर 2026 महाराष्ट्र
epaper.rashtriyaswabhimaan.in
www.rashtriyaswabhimaan.com

META कार्यालय के बाहर मुंबई युवक कांग्रेस का जोरदार प्रदर्शन, केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव का पोस्टर जलाकर जताया विरोध

मुंबई। भाजपा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के खिलाफ आवाज उठाने वालों के सोशल मीडिया अकाउंट निलंबित किए जाने के विरोध में मुंबई युवक कांग्रेस ने शुक्रवार, 20 नवंबर को बीकेसी स्थित वर्ल्ड वन में META (फेसबुक-इंस्टाग्राम) के कार्यालय के बाहर जोरदार प्रदर्शन किया। मुंबई युवक कांग्रेस की अध्यक्ष झीनत शबरीन के नेतृत्व में हुए इस आंदोलन के दौरान केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव का पोस्टर जलाकर विरोध जताया गया। प्रदर्शनकारियों ने 'META भाजपाचा बेटा' जैसे नारे लगाकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की भूमिका पर सवाल उठाए।

आंदोलनकारियों ने आरोप लगाया कि भारतीय युवक कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय भानु चिब और राष्ट्रीय प्रभारी मनीष शर्मा के सोशल



मीडिया अकाउंट निलंबित किया जाना विरोधी विचारों की आवाज दबाने का प्रयास है। उनका कहना था कि सोशल मीडिया के माध्यम से सरकार से सवाल पूछने और अपनी असहमति व्यक्त करने वालों के अकाउंट पर कार्रवाई करना लोकतांत्रिक अधिकारों को प्रभावित करता है।

मुंबई युवक कांग्रेस की अध्यक्ष झीनत शबरीन ने कहा कि लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक को सरकार से सवाल पूछने और अपनी बात रखने का अधिकार है। सोशल मीडिया अकाउंट निलंबित कर इस अधिकार को सीमित करने के प्रयासों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि लोकतांत्रिक आवाजों को दबाने के किसी भी प्रयास के खिलाफ युवक कांग्रेस का संघर्ष जारी रहेगा।

इस प्रदर्शन में मुंबई युवक कांग्रेस के प्रभारी पवन मजीठिया, प्रदेश महासचिव अमनदीप सैनी, उत्तर मध्य जिला अध्यक्ष निखिल रुपारेल, उत्तर पश्चिम जिला अध्यक्ष अब्दुल समद, उत्तर पूर्व जिला अध्यक्ष शेखर जगताप, विधानसभा अध्यक्ष विकास जयस्वाल, आशिष सरोज, राहुल पेडणेकर और शिवेंद्र घोरपडे सहित बड़ी संख्या में पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता शामिल हुए।

दिवा-अगासन डकैती कांड में पुलिस की जांच तेज, 25 संदिग्धों से पूछताछ

ठाणे। दिवा के अगासन गांव में आधी रात के करीब हुई डकैती की वारदात ने इलाके के नागरिकों में भय का माहौल पैदा कर दिया है। नौ लोगों द्वारा अंजाम दी गई इस डकैती में करीब 2 लाख 39 हजार रुपये की संपत्ति लूटे जाने की जानकारी सामने आई है। घटना की गंभीरता को देखते हुए मुंब्रा पुलिस ने ठाणे क्राइम ब्रांच यूनिट-10 के साथ मिलकर आरोपियों की तलाश तेज कर दी है। पुलिस अब तक इस मामले में 25 संदिग्धों से पूछताछ कर चुकी है।

मुंब्रा पुलिस के अनुसार, घटना की सूचना मिलते ही जांच शुरू कर दी गई थी। बंगले में प्रवेश करने के तरीके और वारदात को अंजाम देने के ढंग का विश्लेषण किया जा रहा है। जांच के दौरान पुलिस को आशंका है कि आरोपी दिवा या आसपास के क्षेत्रों से परिचित हो सकते हैं। इसी आधार पर स्थानीय स्तर पर संदिग्धों की पहचान कर उनसे पूछताछ की जा रही है, ताकि वारदात से जुड़े अहम सुराग मिल सकें।

इस मामले में मुंब्रा पुलिस और क्राइम ब्रांच की अलग-अलग टीमें दिवा, मुंब्रा तथा आसपास के इलाकों में लगातार जांच कर रही हैं। इसके साथ ही शहर और शहर के बाहर भी संभावित ठिकानों पर तलाश की जा रही है। पुलिस घटनास्थल और आसपास के क्षेत्रों के सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है। तकनीकी साक्ष्यों का विश्लेषण कर आरोपियों की पहचान और उनके संभावित ठिकानों का पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है।

पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, मामले की जांच विभिन्न पहलुओं से की जा रही है। संदिग्धों से पूछताछ और तकनीकी साक्ष्यों के आधार पर आरोपियों तक पहुंचने के प्रयास जारी हैं।

ठाणे में यातायात नियमों की धज्जियां: चितलसर में कार की छत पर बैठाकर स्टंट, कासरवडवली में नशे में ट्रेलर चालक ने मारी टक्कर

ठाणे। शहर से गुजरने वाले प्रमुख राजमार्गों और व्यस्त सड़कों पर यातायात नियमों की अनदेखी लोगों की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बनती जा रही है। ठाणे के चितलसर पुलिस स्टेशन क्षेत्र में कार की छत पर दो लोगों को बैठाकर वाहन चलाने और स्टंट करने का मामला सामने आया है। वहीं, कासरवडवली पुलिस स्टेशन क्षेत्र के घोड़बंदर रोड स्थित आनंदनगर सिग्नल पर कथित रूप से शराब के नशे में ट्रेलर चला रहे चालक के कारण सड़क दुर्घटना हुई। दोनों मामलों में पुलिस ने



संबंधित चालकों के खिलाफ कार्रवाई की है।

पुलिस के अनुसार, पहली घटना 17 नवंबर 2026 को चितलसर पुलिस स्टेशन की सीमा में हुई। श्री साई आदर्श सोसाइटी, धर्मवीर नगर, चितलसर-मानपाड़ा निवासी टैक्सी चालक हिमांशु राजेंद्र जायसवाल (25) बलकुम से लोकपुरम की ओर वाहन चला रहा था। आरोप है कि उसने यातायात नियमों का उल्लंघन करते हुए दो व्यक्तियों को बिना किसी सुरक्षा व्यवस्था के वाहन की छत पर बैठा रखा था। इस तरह वाहन चलाकर उसने उनकी जान जोखिम में डाली। मामले में चितलसर पुलिस स्टेशन में चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

दूसरी घटना 18 नवंबर 2026 की रात करीब 9.58 बजे घोड़बंदर रोड स्थित आनंदनगर सिग्नल पर हुई। पुलिस के मुताबिक, हरेंद्र यादव (29) नामक चालक ट्रेलर तेज गति से चला रहा था। इसी दौरान ट्रेलर की एक ट्रक से टक्कर हो गई। टक्कर के बाद ट्रक अनियंत्रित होकर भूषण टिपनीस की नेक्सन ईवी कार से जा टकराया। इस दुर्घटना में कार के पिछले दाहिने हिस्से को नुकसान पहुंचा।

घटना के बाद पुलिस ने चालक की ब्रेथ एनालाइजर से जांच की, जिसमें उसके शराब के नशे में होने की पुष्टि हुई। इसके बाद कासरवडवली पुलिस स्टेशन में चालक के खिलाफ मामला दर्ज किया गया।

लगातार सामने आ रही ऐसी घटनाएं सड़क सुरक्षा और यातायात नियमों के पालन को लेकर चिंता बढ़ाती हैं। पुलिस की कार्रवाई के साथ-साथ वाहन चालकों की जिम्मेदारी भी जरूरी है, ताकि लापरवाही के कारण किसी की जान खतरे में न पड़े।

ठाणे में पेंशनभोगियों के लिए डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र महाशिविर आयोजित, सहज प्रतिक्रिया मिली

जिला कोषागार कार्यालय की पहल पर विशेष कार्यशाला संपन्न, विभिन्न बैंकों ने मौके पर बनाए डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र

ठाणे। राज्य सरकार के पेंशनभोगियों और पारिवारिक पेंशनभोगियों के लिए जीवन प्रमाण पत्र जमा करने की प्रक्रिया को सरल, तेज और पारदर्शी बनाने के उद्देश्य से जिला कोषागार कार्यालय, ठाणे की ओर से विशेष कार्यशाला एवं महाशिविर का आयोजन किया गया। जिला योजना समिति हॉल, कलेक्टर क्वार्टर में आयोजित इस शिविर में बड़ी संख्या में पेंशनभोगियों ने हिस्सा लिया।

यह आयोजन केंद्र सरकार के कार्मिक, लोक शिकायत एवं पेंशन मंत्रालय के पेंशनभोगी कल्याण विभाग तथा महाराष्ट्र सरकार के वित्त विभाग और लेखा एवं कोषागार निदेशालय के संयुक्त सहयोग से संचालित देशव्यापी 'डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र अभियान-5' के अंतर्गत किया गया। सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक आयोजित कार्यशाला में डीओपीपीडब्ल्यू के महानिदेशक



डॉ. प्रमोद कुमार कौशिक मुख्य मार्गदर्शक के रूप में उपस्थित रहे। उनके साथ कोंकण भवन के लेखा एवं कोषागार के संयुक्त निदेशक दत्तादास कराडकर, उप निदेशक प्रमोद पाटिल तथा बैंक ऑफ इंडिया के केंद्रीय महाप्रबंधक सारंगी अंतर्यामी प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

कार्यक्रम का परिचय ठाणे के जिला कोषागार अधिकारी महेशकुमार करंडे ने दिया। कार्यक्रम का संचालन समाज कल्याण विभाग के सहायक लेखा अधिकारी अरुण सालुंखे ने किया, जबकि सचिन हिरवे ने आभार व्यक्त किया।

कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों एवं विशेषज्ञों ने पेंशनभोगियों को डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र के महत्व और इसकी उपयोगिता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने अधिक से अधिक पेंशनभोगियों से 'जीवन प्रमाण ऐप' का उपयोग कर डिजिटल सुविधा का लाभ उठाने की अपील की। अपर कोषागार अधिकारी (पेंशन) सुनील भोईर ने ऐप की कार्यप्रणाली, पंजीकरण और उपयोग की प्रक्रिया समझाई।

शिविर में विभिन्न बैंकों के प्रबंधकों एवं प्रतिनिधियों ने अपने स्टॉल लगाए, जहां पेंशनभोगियों और पारिवारिक पेंशनभोगियों के डिजिटल जीवन प्रमाण पत्र तत्काल तैयार किए गए।

जिला कोषागार अधिकारी महेशकुमार करंडे के मार्गदर्शन में अपर कोषागार अधिकारी (पेंशन) सुनील भोईर एवं अन्य कर्मचारियों ने शिविर के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस पहल से पेंशनभोगियों को कार्यालयों और बैंकों के अनावश्यक चक्कर लगाने से राहत दिलाने तथा डिजिटल सेवाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने में मदद मिली।

ठाणे में खाद्य एवं औषधि प्रशासन की बड़ी कार्रवाई, 2 करोड़ रुपये के खाद्य पदार्थ जब्त

ठाणे। खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग पर अनिवार्य जानकारी में कथित हेराफेरी के मामले में महाराष्ट्र खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई करते हुए डीएक्सपी वेंचर प्राइवेट लिमिटेड के गोदाम पर छापेमारी की। 18 और 19 नवंबर को की गई इस कार्रवाई में करीब 2 करोड़ रुपये मूल्य के खाद्य पदार्थ जब्त किए गए। प्रारंभिक जांच में पैकेजिंग पर महत्वपूर्ण जानकारियों के साथ छेड़छाड़ किए जाने का मामला सामने आया है। प्रशासन ने कंपनी के खिलाफ मामला दर्ज करने के साथ उसका लाइसेंस निलंबित कर दिया है। खाद्य एवं औषधि प्रशासन, ठाणे प्रभाग-10 के सहायक आयुक्त योगेश धाने को मिली गोपनीय सूचना के आधार पर यह कार्रवाई की गई। महाराष्ट्र के खाद्य सुरक्षा आयुक्त डॉ. तुकाराम मुंढे के मार्गदर्शन में चलाए गए अभियान के दौरान कंपनी के गोदाम में रखे खाद्य पदार्थों के स्टॉक की जांच की गई। जनस्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए सक्षम लाइसेंसिंग प्राधिकारी एवं सहायक आयुक्त योगेश धाने ने 19 नवंबर को कंपनी का लाइसेंस निलंबित करने का आदेश दिया। इस कार्रवाई में खाद्य सुरक्षा अधिकारी के. वाई. चिपलुनकर और ए. वी. कंडेलकर ने भाग लिया। पूरी कार्रवाई सहायक आयुक्त (खाद्य), ठाणे प्रभाग-10 योगेश धाने तथा संयुक्त आयुक्त (खाद्य) डॉ. सचिन जाधव के मार्गदर्शन में की गई।

छापेमारी के दौरान स्पार्कलिंग वाटर, एनर्जी ड्रिंक, सऊदी कॉकटेल, सोडा, प्रीमियम सोडा वाटर, जिंजर सोडा और ए-2 बिलोना देसी घी सहित कुल 14 प्रकार के खाद्य पदार्थ बड़ी मात्रा में जब्त किए गए। प्रशासन अब जब्त किए गए उत्पादों और उनकी पैकेजिंग से संबंधित जानकारी की जांच कर रहा है।

खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने वाले मामलों को गंभीरता से लिया जाएगा। खाद्य पदार्थों के लेबल पर अनिवार्य जानकारी में हेराफेरी, मिलावट, संदिग्ध खाद्य पदार्थों का कारोबार और खाद्य सुरक्षा नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कानून के अनुसार सख्त कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन ने नागरिकों से अपील की है कि यदि उन्हें किसी खाद्य पदार्थ की गुणवत्ता, गलत लेबलिंग या खाद्य सुरक्षा नियमों के उल्लंघन को लेकर संदेह हो, तो इसकी सूचना खाद्य एवं औषधि प्रशासन को दें।

प्रदीप पूर्णेकर हत्याकांड : 50 दिन बाद भी न्याय का इंतजार, राम पूर्णेकर जल्द करेंगे नए सबूतों का खुलासा

ठाणे। प्रदीप पूर्णेकर की हत्या को 50 दिन बीत चुके हैं, लेकिन परिवार को अब तक न्याय मिलने की उम्मीद पूरी होती नजर नहीं आ रही है। मामले में पुलिस को कई सबूत सौंपे जाने के बावजूद ठोस कार्रवाई नहीं होने पर मृतक के बेटे राम पूर्णेकर ने नाराजगी जताई है। उन्होंने जल्द ही प्रेस कॉन्फ्रेंस कर पुलिस को अब तक सौंपे गए सबूतों की सूची के साथ कुछ नए सबूत भी मीडिया के सामने रखने की घोषणा की है। उनके इस बयान के बाद सवाल उठने लगा है कि आखिर राम पूर्णेकर के हाथ कौन से नए सबूत लगे हैं? राम पूर्णेकर का दावा है कि उन्होंने हत्या से जुड़े कई फोटो और वीडियो ठाणे पुलिस तथा विशेष जांच दल (एसआईटी) को सौंपे हैं, लेकिन अब तक अपेक्षित कार्रवाई नहीं हुई है। उनका आरोप है कि सबूतों को अपने पास रखने और फोरेंसिक जांच का हवाला देने के बावजूद जांच में ठोस प्रगति दिखाई नहीं दे रही है। उन्होंने कहा कि अब परिवार पुलिस की ओर से अदालत में आरोपपत्र दाखिल किए जाने का इंतजार कर रहा है, ताकि उसमें दर्ज तथ्यों और जांच की दिशा की जानकारी मिल सके। गुरुवार को मीडिया से बातचीत के दौरान राम पूर्णेकर से नए सबूतों के बारे में सवाल किया गया। इस पर उन्होंने कहा कि कुछ नए सबूत उनके हाथ लगे हैं और आगामी प्रेस कॉन्फ्रेंस में वे पहले पुलिस को सौंपे गए सबूतों के साथ इन्हें भी सार्वजनिक करेंगे। उन्होंने संकेत दिया कि हत्या से संबंधित बातचीत की एक ऑडियो क्लिप भी उन्हें स्थानीय लोगों और मृतक के करीबी सहयोगियों के माध्यम से मिली है। राम पूर्णेकर ने कहा कि इस ऑडियो क्लिप को भी प्रेस कॉन्फ्रेंस में पेश किया जाएगा। अब सभी की निगाहें राम पूर्णेकर की प्रस्तावित प्रेस कॉन्फ्रेंस पर टिकी हैं। हालांकि, नए बताए जा रहे सबूतों की वास्तविकता और उनकी जांच में प्रासंगिकता का पता संबंधित सामग्री सामने आने तथा पुलिस की आधिकारिक जांच के बाद ही चल सकेगा।

ठाणे में एक सप्ताह के भीतर तीन लोग लापता बुजुर्ग से लेकर युवक तक की तलाश जारी

65 वर्षीय चप्पल विक्रेता, 30 वर्षीय युवक और 74 वर्षीय महिला का नहीं मिला सुराग; चितलसर और श्रीनगर पुलिस थानों में शिकायत दर्ज

ठाणे। ठाणे शहर के अलग-अलग इलाकों से एक ही सप्ताह के दौरान तीन लोगों के लापता होने से उनके परिवारों की चिंता बढ़ गई है। लापता लोगों में 65 वर्षीय चप्पल विक्रेता, 30 वर्षीय युवक और 74 वर्षीय बुजुर्ग महिला शामिल हैं। परिजनों और रिश्तेदारों द्वारा अपने स्तर पर तलाश किए जाने के बावजूद कोई जानकारी नहीं मिलने पर चितलसर और श्रीनगर पुलिस थानों में शिकायत दर्ज कराई गई है।

पहली घटना गांधीनगर क्षेत्र की है। यहां रहने वाले नारायण दगदोबा थोम्ब्रे (65) 16 नवंबर को रोजाना की तरह चप्पल बेचने के लिए घर से निकले थे। दोपहर भोजन के समय तक घर नहीं लौटने पर परिजनों ने उनकी तलाश शुरू की। जिस स्थान पर वे चप्पल बेचते थे, वहां उनका



बैग मिला, लेकिन उनका कोई पता नहीं चला। उनकी पत्नी द्रौपदी थोम्ब्रे ने चितलसर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है। दूसरी घटना वागले एस्टेट की है। यहां रहने वाले अभिमन्यु शंकर खरात (30) आठ नवंबर को तंबाकू खरीदने के लिए घर से निकले थे, लेकिन वापस नहीं लौटे। परिजनों के अनुसार, उन्हें शराब की लत है और इससे पहले उन्हें कलवा तथा मुंब्रा रेलवे स्टेशन के आसपास देखा गया था। उनके पिता शंकर खरात ने श्रीनगर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है। तीसरी घटना में वागले एस्टेट की रहने वाली लिंगम्मा चंद्रन्ना कुंभार (74) 16 नवंबर को हनुमाननगर से अपने घर के लिए निकली थीं, लेकिन घर नहीं पहुंचीं। परिजनों के मुताबिक, उनकी मानसिक स्थिति ठीक नहीं थी और वह पहले भी लापता हो चुकी थीं। काफी तलाश के बाद उनके पोते गोवर्धन कुंभार ने श्रीनगर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई।

तीनों मामलों में पुलिस लापता व्यक्तियों की तलाश कर रही है। परिजनों ने लोगों से अपील की है कि यदि किसी को भी इन व्यक्तियों के संबंध में कोई जानकारी मिले तो तत्काल नजदीकी पुलिस स्टेशन को सूचित करें।

अंतरराष्ट्रीय शौचालय दिवस पर ठाणे जिले में विशेष अभियान स्कूलों और आंगनवाड़ियों की सुविधाओं में होगा सुधार

19 नवंबर से 10 दिसंबर तक चलेगा 'स्वच्छ शौचालय, गरिमामय भविष्य' अभियान; सफाई, सुरक्षा, मरम्मत और नियमित इस्तेमाल पर विशेष जोर

ठाणे। अंतरराष्ट्रीय शौचालय दिवस के अवसर पर ठाणे जिले में स्वच्छता और बेहतर सार्वजनिक सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए 19 नवंबर से 10 दिसंबर 2026 तक 'स्वच्छ शौचालय, गरिमामय भविष्य' विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत जिले के स्कूलों, आंगनवाड़ियों, ग्राम पंचायतों और सार्वजनिक स्थलों पर शौचालयों की स्थिति का निरीक्षण कर आवश्यक सुधार किए जाएंगे।

केंद्र सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के निर्देशों के अनुसार संचालित इस अभियान का उद्देश्य केवल शौचालयों के निर्माण और उपयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके नियमित रखरखाव, स्वच्छता और सुरक्षा के प्रति भी जागरूकता बढ़ाना है। प्रशासन का विशेष ध्यान महिलाओं, विद्यार्थियों और दिव्यांगजनों को सुरक्षित एवं सुलभ शौचालय



सुविधाएं उपलब्ध कराने पर है। अभियान के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों के साथ-साथ स्कूलों और आंगनवाड़ी केंद्रों में शौचालयों की उपलब्धता, साफ-सफाई, पानी की व्यवस्था, मरम्मत और उपयोग की स्थिति का जायजा लिया जाएगा। जहां कमियां पाई जाएंगी, वहां संबंधित विभागों और एजेंसियों के माध्यम से आवश्यक सुधार कराने की योजना है।

इस अभियान में ग्राम पंचायतों, स्कूलों, आंगनवाड़ियों, महिला स्वयं सहायता समूहों और स्थानीय नागरिकों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। इसके अलावा उत्कृष्ट सार्वजनिक स्वच्छता परिसरों, संस्थागत एवं व्यक्तिगत शौचालयों का मूल्यांकन कर बेहतर कार्य करने वालों को सम्मानित भी किया जाएगा। स्वच्छता और नियमित रखरखाव के प्रति नागरिकों की जिम्मेदारी बढ़ाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है।

जिला परिषद के जल एवं स्वच्छता विभाग के उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी पंडित राठौड़ ने कहा कि शौचालयों की उपलब्धता के साथ उनकी नियमित सफाई, सुरक्षा और निरंतर उपयोग पर भी विशेष ध्यान देना आवश्यक है। अभियान के दौरान विभिन्न सार्वजनिक एवं संस्थागत स्थलों का निरीक्षण कर संबंधित एजेंसियों को जरूरी सुधार के लिए मार्गदर्शन दिया जा रहा है।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी (प्रभारी) अजिंक्य पवार ने ग्राम पंचायतों, स्कूलों, आंगनवाड़ियों, महिला स्वयं सहायता समूहों और जिले के नागरिकों से अभियान में सक्रिय भागीदारी की अपील की है। उन्होंने कहा कि स्वच्छ शौचालय केवल सरकारी योजनाओं का विषय नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, सुरक्षा और मानवीय सम्मान से जुड़ा महत्वपूर्ण मुद्दा है।

ठाणे जिला परिषद ने नागरिकों से अपील की है कि वे इस अभियान को जनभागीदारी का स्वरूप दें और शौचालयों की स्वच्छता, नियमित रखरखाव तथा उपयोग की आदत को अपनी सामूहिक जिम्मेदारी बनाएं।